पंजीयन संख्या : 68939/98 अंक - 12, वर्ष 24

ज्ञान तत्व

विशेष लेख

राजनीति के 10 नाटक

समाज शास्त्र | अर्थ शास्त्र | धर्म शास्त्र | राजनीति शास्त्र

451

-: सम्पादक :-

बजरंग लाल अग्रवाल

रामानुजगंज (छ.ग.)

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 01.06.2024

प्रकाशन की तारीख 16.05.2024

पाक्षिक मूल्य - 2.50/- (दो रूपये पचाय पैसे)

विविध विषयों पर मुनि जी के लेख

1. दोषी का बच जाना न्याय सिद्वान्त की अवहेलना:

यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे भारत की न्यायपालिका अमेरिका, ब्रिटेन जैसे देशों के न्याय सिद्धांतों की नकल करती है, नकल ही नहीं बल्कि उन सिद्धांतों पर चलने में अपना गर्व समझती है। दुनिया के न्याय सिद्धांतों में यह सबसे गंदा सिद्धांत है कि चाहे सौ अपराधी भले ही निर्दोष छूट जाए लेकिन एक भी निरपराध को सजा नहीं होनी चाहिए। मैं समझता हूं इस सिद्धांत ने दुनिया का बहुत नुकसान किया है। एक तरफ चीन, उत्तर कोरिया जैसे देश हैं जो यह न्याय सिद्धांत देते हैं कि भले ही सौ निरपराध दंडित हो जाएं लेकिन एक भी अपराधी बचना नहीं चाहिए। मैं इन दोनों न्याय सिद्धांतों को गलत मानता हूं हमारा न्याय सिद्धांत इस प्रकार का होना चाहिए कि ना कोई अपराधी छूटे ना कोई निरपराध दंडित हो। न्याय सिद्धांत तो यह कहता है कि यदि कोई अपराधी निर्दोष छूट जाता है तो यह उस निर्दोष के साथ अन्याय है।

यह कैसा न्याय सिद्धांत है, जो कहता है कि भले ही सौ निर्दा ेषों के साथ अन्याय हो जाए लेकिन किसी एक निर्दोष के साथ अन्याय नहीं होना चाहिए। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि अब भारत को इस प्रकार के न्याय सिद्धांत से अलग होकर अपना भारतीय न्याय सिद्धांत सामने लाने की जरूरत है।

2. गाँधी के विपरीत है इस्लाम और साम्यवाद की विचारधारा:

मेरे कुछ मित्र मुझसे यह जानना चाहते हैं कि मैं कांग्रेस पार्टी के इतना खिलाफ क्यों हूं। मैं स्पष्ट कर दूं कि मैं कांग्रेस पार्टी के खिलाफ नहीं हूं, कांग्रेस तो कोई पार्टी है ही नहीं। वह तो नेहरू परिवार की एक दुकान है, जिसमें सभी कांग्रेसी कर्मचारी काम करते हैं। मैं सिर्फ और सिर्फ साम्यवाद के खिलाफ हूं, साम्यवाद दुनिया की सबसे खतरनाक विचारधारा है, साम्यवाद को पूरी तरह समाप्त करना आवश्यक है। साम्यवाद के बाद, अगर दूसरे नंबर पर कोई खतरनाक संगठन है तो वह है इस्लाम। इस्लाम को मैं साम्यवाद के बाद खतरनाक मानता हूं। इन दोनों ही समस्याओं का समाधान हैं 'गांधी'। साम्यवाद और इस्लाम दोनों के विरुद्ध गांधी की विचारधारा है। गांधी के मरते ही नेहरू और उनका परिवार पूरी तरह साम्यवाद और इस्लाम के पकड़ में आ गया। नेहरू पूरी तरह कम्युनिस्ट भी हो गए और सांप्रदायिक भी। नेहरू ने गांधी विचारों को पूरी तरह छोड़ दिया, इसलिए मैं नेहरू का विरोधी हो गया। नेहरू के मरने के बाद भी नेहरू परिवार साम्यवाद और इस्लाम दोनों के साथ खड़ा रहा, नेहरू परिवार ने कभी भी गांधी विचार को महत्व नहीं दिया। इसलिए वर्तमान समय में मैं विचारधारा के रूप में साम्यवाद को गलत मानता हूं, जहां साम्यवाद कमजोर है, वहां

इस्लाम को गलत मानता हूं और जहां दोनों कमजोर हैं, वहां नेहरू परिवार को गलत मानता हूं। जब भी नेहरू परिवार को छोड़कर कोई अन्य कांग्रेस का प्रधानमंत्री बना है तो मैंने हमेशा उसका समर्थन किया है विरोध नहीं। अभी-अभी केरल में साम्यवाद और कांग्रेस पार्टी के बीच जो राजनीतिक टकराव हुआ, उसमें मैं कांग्रेस का समर्थक रहा। इसलिए मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि मैं कांग्रेस विरोधी नहीं हूं।

3. कट्टरपंथी आतंकवादी घटनाएँ और सांप्रदायिक तुष्टीकरण की राजनीति:

पता चला है कि रूस में कुछ लोगों ने चर्च पर आक्रमण किया और वहां के पादरी समेत 16 लोगों की हत्या कर दी 10-20 लोग घायल भी हो गए। अब तक ऐसा संदेह किया जा रहा है कि जिस प्रदेश में यह घटना घटी है, वहां मुस्लिम आतंकवादी ज्यादा सक्रिय हैं और इस घटना में भी प्ैप्ै या अन्य मुस्लिम आतंकवादियों का हाथ हो सकता है। आज ही खबर मिली कि राजस्थान के जोधपुर में भी मुसलमान और हिंदुओं के बीच टकराव हुआ है, जहां मुसलमान पक्ष ने पहल की है। मैं अभी तक नहीं समझ सका कि राहुल गांधी इस बात को कब समझेंगे कि सांप्रदायिकता की मदद लेकर राजनीति में तो आगे बढ़ा जा सकता है लेकिन इससे देश और समाज का बहुत नुकसान होगा। जब से वर्तमान चुनाव में राहुल गांधी मजबूत हुए हैं, तब से बंगाल सहित देश के अन्य भागों में भी कट्टरपंथी मुसलमानों के हौसले बुलंद हुए हैं। मैं चाहता हूं कि राहुल गांधी इस सच्चाई को समझें। रूस का उदाहरण भी देखें, दुनिया के अन्य जगहों का भी देखें और तब भविष्य के लिए कोई निर्णय करें। सत्ता और राजनीति ही सब कुछ नहीं है। धर्म के आधार पर विशेष अधिकार देने की घोषणा भविष्य में राहुल गांधी के लिए भी महंगी पड़ेगी।

4. राहुल गाँधी ने मत विभाजन अलग रहकर ठीक किया:

अब तक आमतौर पर ऐसा माना जा रहा है कि राहुल गांधी में बचपना है, राहुल गांधी निर्णय नहीं कर पाते हैं लेकिन आज राहुल गांधी ने इस प्रकार की बातों को झूठा सिद्ध कर दिया है। राहुल गांधी को जब 232 सीट मिली तो राहुल गांधी ने नरेंद्र मोदी को ब्लैकमेल करने की भरपूर कोशिश की, उन्होंने पूरा जोर लगाया कि संसद में उपाध्यक्ष का पद विपक्ष को मिल जाए। अंत तक इस बात पर अड़े रहे लेकिन नरेंद्र मोदी नहीं झुके। संसद में भी राहुल गांधी ने अपना उम्मीदवार खड़ा किया लेकिन जब देखा कि ममता बनर्जी भी पक्ष में नहीं दिख रही हैं तो संसद में मत विभाजन करने की मूर्खता ना करके राहुल गांधी ने सर्व सम्मति से ओम बिरला को अध्यक्ष मान लिया। इसका अर्थ यह हुआ कि राहुल गांधी ने प्रत्यक्ष हारने के बजाय सर्व सम्मति का समर्थन कर दिया।

परिस्थिति अनुसार राहुल ने पराजय घोषित होने के पहले ही पराजय स्वीकार करके अकल का काम किया है। इसलिए अब राहुल गांधी के बारे में कुछ धारणाएं बदल भी सकती हैं।

5.अविश्वास लालच और डर बस इतनी सी है अरविन्द केजरीवाल की कहानी:

आजकल भारत में न्यायालय और टीवी में जितनी चर्चा अरविंद केजरीवाल की होती है, उतनी और किसी की नहीं होती। मेरे विचार में अरविंद केजरीवाल से देश को बहुत उम्मीदें थी, वह सब धरी की धरी रह गई। अरविंद केजरीवाल कुर्सी के मोह में इतना नीचे गिर जाएंगे, इस तरह की उम्मीद ना मुझे थी, ना देश में किसी और को थी। यहां तक कि आम आदमी पार्टी वालों को भी इतनी गिरने की उम्मीद नहीं थी। अरविंद केजरीवाल जिस तरह कई महीनों से जेल में है और कुर्सी से चिपके हुए हैं, वह बहुत ही अनैतिक घटना है। मैं मानता हूं कि संवैधानिक स्तर पर वह कुर्सी से उतरने के बाद भी चिपके रह सकते हैं लेकिन उनका यह कार्य अनैतिक तो है ही अरविंद केजरीवाल को इस तरह कुर्सी से नहीं चिपकना चाहिए था। आप जरा विचार करिए कि जो अरविंद केजरीवाल ने मुख्यमंत्री रहते हुए सैकड़ों बार यह कहा कि मैं जेल जाने से नहीं डरता। वही अरविंद केजरीवाल जेल के अंदर जाते ही इस कदर परेशान हो गए कि उनका वजन गिरने लगा। वे इस कदर परेशान हो गए कि उनको नींद नहीं आती है। आप विचार करिए कि 2 दिन पहले जब अरविंद केजरीवाल को रिहाई की सूचना मिली तो उनका धीरे-धीरे ब्लड प्रेशर बढ़ने लगा और ज्यों ही अरविंद केजरीवाल को यह खबर मिली कि उनकी रिहाई रुक गई है त्यों उनका ब्लड प्रेशर इतना गिर गया कि वह न्यायालय में भी ठीक से खड़ा नहीं रह सके। भाई अगर जेल का इतना डर अरविंद केजरीवाल को सता रहा है कि जेल में इस तरह से बीमार पड़ जा रहे हैं तो उन्हें कुर्सी का मोह छोड़कर एक आम आदमी के रूप में जेल में रहना चाहिए था। अरे भाई अरविंद केजरीवाल हम लोग भी तो 18-18 महीने जेल में रह चुके हैं, आपको यहाँ प्रतिदिन न्यायालय और प्रतिदिन अस्पताल की चिंता सता रही है, यह संविधान का दुरुपयोग है और पूरी तरह अनैतिक है। हो सकता है कि आप कुर्सी पर बने रहें लेकिन समाज में मुंह दिखाने लायक नहीं हो। लालू प्रसाद ने भी अपनी पत्नी को पावर दे दिया था, सोरेन ने भी अपने विश्वसनीय को सत्ता दे दी, अरविंद केजरीवाल को दुनिया में अपने अलावा किसी पर विश्वास नहीं है।

6. देशभर में मजबूत होती कांग्रेस:

अभी चार दिन पहले की ही बात है, अरविंद केजरीवाल को लोअर कोर्ट से जमानत मिली। आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने देशभर में नारे लगाने शुरू कर दिए 'जेल के ताले टूट गए, अरविंद केजरीवाल छूट गए'। दिल्ली में भी उनके स्वागत की बड़ी-बड़ी तैयारी होने लगी

और यह घोषित कर दिया गया कि अरविंद केजरीवाल के साथ न्याय हुआ है। हमें न्यायपालिका पर विश्वास है, न्यायपालिका ने यह स्वीकार कर लिया है कि अरविंद केजरीवाल ने जो किया, सब सही किया है। उनकी पत्नी सुनीता भी राजघाट पर गांधी मूर्ति के सामने एक बड़ी सभा करने की योजना बनाने लगी और भी पता नहीं क्या-क्या ख्याली पुलाव पकाने लगी कि अरविंद केजरीवाल को निर्दोष घोषित कर दिया गया। 2 घंटे के बाद ही उच्च न्यायालय में अरविंद केजरीवाल को फिर से अपराधी मान लिया। मुझे यह समझ में नहीं आया कि अरविंद केजरीवाल के छूटने के पहले ही वे इस प्रकार के नारे लगाने की बेवकूफी क्यों की गई। अब अरविंद केजरीवाल की जमानत नहीं हुई तो दोषी नरेंद्र मोदी है, जमानत हो गई तो दोषी नरेंद्र मोदी है, हर मामले में नरेंद्र मोदी की आलोचना मेरे विचार से ठीक नहीं है। आम आदमी पार्टी को राजनीतिक आधार पर नरेंद्र मोदी का विरोध करना चाहिए, सामाजिक आधार पर विरोध करना उचित नहीं है। बड़े-बड़े भ्रष्टाचार करना और गांधी मूर्ति के सामने बैठना यह पूरी तरह गलत राजनीति है। इसी तरह अरविंद केजरीवाल से एक गलती और हो रही है। अरविंद केजरीवाल कांग्रेस का विकल्प बन रहे थे, पूरे देश में उनकी ताकत बढ़ रही थी लेकिन किसी न किसी गलती के कारण अरविंद केजरीवाल कांग्रेस के सामने पिछड़ने लगे हैं। अब तो ऐसा दिख रहा है कि कांग्रेस आम आदमी पार्टी को पूरी तरह समाप्त कर देगी। इस विषय पर भी अरविंद केजरीवाल को गंभीरता से विचार करना चाहिए। कांग्रेस पार्टी देशभर में लगातार मजबूत हो रही है, यह बात नरेंद्र मोदी के साथ-साथ विपक्ष को भी समझना पड़ेगा। भारत के मुसलमान, कम्युनिस्ट और गांधीवादी तीनों एकजुट होकर कांग्रेस पार्टी को अपनी पहली पसंद मानने लगे हैं।

7. गाँधी विचारों पर हो हिन्दू मुस्लिम एकता:

धार्मिक मान्यताएं जब रूढ़िवादी हो जाती हैं, तब उनमें बुराइयां आने लगती हैं। कुछ लोग इन बुराइयों का समय-समय पर समाधान करते रहते हैं और कुछ लोग इन बुराइयों का लाभ उठाने का प्रयास करते हैं। ऐसी ही बुराइयां हिंदुओं में भी आई और मुसलमान में भी आई। गांधी हिंदुओं और मुसलमानों की इन बुराइयों को दूर करना चाहते थे जबकि सावरकर मुसलमान की बुराइयों का लाभ उठाना चाहते थे। दूसरी ओर नेहरू और अंबेडकर हिंदुओं की बुराइयों का लाभ उठाने के चक्कर में थे। दोनों दो गुटों में बंटकर, हिंदुओं और मुसलमानों की बुराइयों का लाभ उठाने लगे। दोनों ने लगातार हिंदुओं और मुसलमानों को संगठित करना शुरू किया, दोनों के बीच टकराव ही सावरकरवादियों और नेहरूवादियों के लिए लाभदायक था। मैं इस बात को अच्छी तरह समझता हूं कि सावरकरवादी या नेहरू परिवार कभी भी हिंदुओं और मुसलमान की एकजुटता का समर्थन नहीं कर सकता क्योंकि दोनों के ही अपने-अपने स्वार्थ हैं। इन स्वार्थी तत्वों के फेर में पड़कर

दोनों ही कट्टर होते जा रहे हैं और यह धार्मिक कट्टरता दोनों ही पक्षों को नुकसान करने वाली है। सच्चाई यह है कि गांधी इन समस्याओं का समाधान है और कट्टरपंथी हिंदू मुसलमान, गांधी को गाली देने में सबसे आगे रहते हैं। कट्टर हिंदुओं ने गांधी के शरीर की हत्या कर दी तो दूसरी ओर नेहरू, कम्युनिस्ट, मुसलमान ने मिलकर गांधी के विचारों की हत्या कर दी। अब भी समय है हम आप सब बैठकर इस प्रकार के कट्टरवादी धार्मिकता से बचने की कोशिश करें अन्यथा यह धार्मिक कट्टरता मुसलमान को भी बर्बाद कर देगी और हिंदुओं को भी नुकसान उठाना पड़ेगा। कट्टरता अल्पकाल के लिए लाभकारी हो सकती है दीर्घकाल के लिए तो घातक ही होती है। मेरा फिर से सुझाव है कि हम गांधी विचारों पर हिंदू और मुसलमान एकजुट होकर आगे बढ़े।

8. साम्यवाद, इस्लाम और नेहरू परिवार के पक्ष या विपक्ष में दोनों दल:

मैंने तो यह निश्चय कर लिया है कि मैं साम्यवाद संगठित इस्लाम और नेहरू परिवार के गठजोड़ के खिलाफ नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत के नेतृत्व में पूरी तरह साथ रहूंगा। मैं नरेंद्र मोदी, मोहन भागवत के साथ हूं देश के गांधीवादियों को, सिखों को, आदिवासियों को, हरिजनों को, उन मुसलमानों को जो संगठित नहीं है धार्मिक मुसलमानों को इसाईयों को सबको साथ लेकर चलने के लिए तैयार हूं। जो लोग इस गठजोड़ के विरोधी हैं जो चाहते हैं कि हम सिख, आदिवासी, हरिजन, शरीफ मुसलमान, ईसाई इन लोगों के साथ नहीं चलना चाहते वे स्वतंत्र हैं जहां भी जाना चाहे चले जाएं। अब तो देश नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत के नेतृत्व में ही चलेगा। देश में दो ही राजनीतिक दल होंगे एक दल होगा साम्यवाद, इस्लाम, नेहरू परिवार का और दूसरा दल होगा साम्यवाद, इस्लाम, नेहरू परिवार के गठजोड़ के खिलाफ वाले लोगों का जो भी लोग होंगे उन सबका। हम किसी भी प्रकार का धार्मिक संगठन बनाने के पक्ष में नहीं है। हम हिंदुओं को एकजुट करने के पक्ष में नहीं है। हमारा तो मानना यह है कि हम साम्यवाद संगठित इस्लाम और नेहरू परिवार के खिलाफ एक मोर्चा बने। इस मोर्चे की कोई भी शर्त धर्म के आधार पर ना हो।

9. जनता की गुलामी का कारण, फिजूल के कानून :

दुनिया के साथ-साथ भारत की सभी सरकारें भी लगातार यह प्रयास करती है कि समाज पर अधिक से अधिक कानून बनाकर थोप दिए जाएं जिससे देश का कोई भी नागरिक सिर उठाकर, यह न कह सके कि वह व्यक्ति कानून का अक्षरशः पालन करता है। आज भारत में 90% तक अनावश्यक कानून बनाए हुए हैं, जिनका सुरक्षा और न्याय से कोई संबंध नहीं है। यह कानून सिर्फ इसीलिए बनाए गए हैं कि हर आदमी अपने को अपराधी समझे। जब व्यक्ति अपने को अपराधी समझेगा तभी वह गर्व से सिर ऊंचा करके सरकार के सामने यह नहीं कह सकेगा कि वह अपराधी

नहीं है। इसलिए ही सरकारें दिन-रात अनावश्यक कानून बनाती रहती हैं। यह कार्य स्वतंत्रता के समय से ही शुरू हो गया था और आज तक चल रहा है क्योंकि अंग्रेजों ने भी इसी प्रकार अनावश्यक कानून बनाए थे और वर्तमान सरकार भी अंग्रेजों की ही आंख बंद करके नकल कर रही है। यदि यह अनावश्यक कानून हटा दिए जाएं तो न्यायालय और पुलिस पर से बोझ कम हो जाएगा दो नंबर के लोगों की संख्या घटकर सिर्फ दो प्रतिशत रह जाएगी जो वर्तमान में 99% है सरकार का और भी खर्चा घट जाएगा साथ-साथ समाज शक्तिशाली हो जाएगा जो कोई भी सरकार नहीं चाहती है। मेरा आपसे निवेदन है कि हम सरकारों पर अनावश्यक कानून हटाने के लिए लगातार दबाव बनाते रहे।

10. राहुल का संसद में झूठ बोलना उचित नहीं:

ऐसी उम्मीद थी कि अब राहुल गांधी एक जिम्मेदार पद पर आ गए हैं और अब पहले की तरह बार-बार झूठ नहीं बोलेंगे लेकिन लगता है की आदत छूटी नहीं है। राफेल के मामले में उन्होंने झूठ बोला, पाकिस्तान पर जो स्ट्राइक हुआ उसे विषय में झूठ बोला और कितने झूठ बोले उनकी गिनती करना उचित नहीं है लेकिन अब नए चुनाव जीतने के बाद और जिम्मेदारी संभालने के बाद भी राहुल गांधी कि आदत नहीं गई। लगता है कि साम्यवादियों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा है, तभी वह झूठ बोलते हैं और तुरंत पकड़े भी जाते हैं। कल उन्होंने एक सफेद झूठ बोला कि लोकसभा अध्यक्ष ने मेरा माइक बोलते समय बंद कर दिया, जबकि लोकसभा अध्यक्ष ने बताया कि उनके पास माइक बंद करने का कोई बटन होता ही नहीं है। यह बात राहुल गांधी को बतानी चाहिए कि उन्होंने जानबूझकर लोकसभा अध्यक्ष पर इस प्रकार का झूठा आरोप क्यों लगाया? क्या वे पहले से नहीं जानते थे कि माइक बंद करने में अध्यक्ष की भूमिका नहीं होती है? मैं फिर से निवेदन करता हूं, अब राहुल गांधी एक जिम्मेदार पद पर हैं और उन्हें इस विषय में स्पष्ट करना चाहिए कि क्या लोकसभा अध्यक्ष ने उनका माइक वास्तव में बंद किया था या उन्होंने झूठा आरोप लगाया। देश को जानना चाहिए कि दोनों में से कौन झूठ बोल रहा है।

11. नीतीश कुमार का राजनैजिक विकल्प और मार्ग:

आज हम राजनीतिक चर्चा करेंगे खासकर नीतीश कुमार को लेकर, नीतीश कुमार सामाजिक न्याय के वर्तमान समय में सबसे बड़े योद्धा है। इन्होंने बिहार से जंगल राज को समाप्त किया और विकास की नई गाथा भी लिखा, साथ में सामाजिक न्याय को ठीक से लागू किया। नीतीश कुमार लोकनायक जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति की पाठशाला से प्रशिक्षित होकर निकले हैं। इन्होंने अपना आदर्श कर्पूरी ठाकुर को माना और उन्हीं के फार्मूला को लेकर बिहार की

राजनीति में आगे बढ़ते हुए, लगातार 20 वर्षों तक शासन कर रहे हैं। वह अति पिछड़ा महादलित पसमदा समाज के साथ-साथ सर्व समाज के नेता के तौर पर स्थापित हैं। नीतीश कुमार व्यक्तिगत जीवन में बेहद ईमानदार हैं लेकिन इधर उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है, इसके चलते उनकी पार्टी पर कई लोगों की नजर लगी हुई है। इसी कड़ी में संजय झा को पार्टी का कार्यकारी अध्यक्ष बनाया गया है, संजय झा की पृष्ठभूमि संघ कार्यकर्ता की रही है और वह अरुण जेटली का आदमी माना जाता था लेकिन वर्तमान समय में अमित शाह का दिया हुआ टारगेट पर काम कर रहे हैं। यही स्थिति ललन सिंह व विजय चौधरी की भी है जो भूमिहार जाति से आते हैं। दूसरी तरफ प्रशांत किशोर यानी प्रशांत पांडे जो ब्राह्मण है और 2014 में नरेंद्र मोदी के लिए काम कर चुके है, वह भी बिहार में भाजपा का हिडन एजेंडा को बड़े बारीक ढंग से लागू कर रहे है।

यह बात साफ हो गई है कि नीतीश कुमार भ्रष्टाचार और धर्मनिरपेक्षता को एक साथ लेकर चलते रहे हैं। बीच के कालखंड में उन्होंने अल्पकाल के लिए चोरों से भी समझौता कर लिया था लेकिन अब उनकी आत्मा जागी है। उन्हें लगा कि मनु ने कुछ गलतियां भले ही की हो लेकिन मार्क्स, नेहरू, अंबेडकर की तुलना में मनु अब भी ज्यादा प्रासंगिक है। मनु की कुछ गलतियों को सुधारा जा सकता है लेकिन मार्क्स अंबेडकर और नेहरू की गलतियों को नहीं। इसलिए नीतीश कुमार अब चोरों का साथ छोड़कर इमानदारो के साथ हो गए हैं नीतीश कुमार बिल्कुल ठीक दिशा में चल रहे हैं। हमें अब विश्वास है कि नितीश कुमार फिर से चोरों के साथ जाने की गलती नहीं करेंगे।

12. राहुल गाँधी को शब्द चयन में सावधानी बरतनी चाहिए:

आज संसद में राहुल गांधी ने हिंदुओं के संबंध में एक बयान दिया। बयान में कुछ भी गलत नहीं था लेकिन राहुल गांधी के शब्द चयन में मूर्खता के कारण उस बयान पर हंगामा हो गया। राहुल ने अपने भाषण में यह बात कही थी कि जो लोग अपने को हिंदू कहते हैं वह हिंसा हिंसा करते हैं वास्तव में वह हिंदू है ही नहीं। वास्तव में राहुल गांधी को यह कहना चाहिए था की जो लोग खुद को हिंदू कहते हैं और हिंसा हिंसा करते हैं वे वास्तव में हिंदू नहीं है लेकिन सिर्फ एक शब्द के मूर्खता के कारण उस शब्द का अर्थ बदल गया जो राहुल गांधी की नीयत नहीं थी। जो बात राहुल गांधी ने कही है वह बात तो मैं बहुत बार कहता हूं कि जिस व्यक्ति ने गांधी की हत्या की और गांधी हत्या का समर्थन किया वह वास्तव में हिंदू है ही नहीं। उसे हिंदू धर्म का कुछ भी पता नहीं है लेकिन राहुल की मूर्खता के कारण यह समस्या पैदा हुई राहुल गांधी को बोलने के पहले सीखना चाहिए।

13. ऐसा संविधान जो ठीक से काम भी न कर सका:

हम लोगों का एक छोटा-सा ग्रुप अकेला ऐसा है जो यह मानता है कि भारत की सभी समस्याओं की जड़ हमारे संविधान में है। संविधान बनने के बाद हमारे राजनेताओं ने इस संविधान में कितने मनमाने संशोधन किये कि यह संविधान कूड़ा कचरा बन गया। जब तक राजनेताओं से संविधान संशोधन के असीम अधिकारों पर कोई संवैधानिक अंकुश नहीं लगेगा तब तक संविधान का इसी प्रकार दुरुपयोग होता रहेगा। इसलिए हम यह उम्मीद कर रहे थे कि नरेंद्र मोदी की सरकार इस संविधान को राजनेताओं के चंगुल से मुक्त कर देगी। हम पूरी तरह आस्वस्त थे। यह सच है कि साम्यवाद, इस्लाम, नेहरू परिवार का गठजोड़ इस प्रकार के किसी संशोधन का विरोधी था और भारतीय जनता पार्टी भी इस बात से डर रही थी लेकिन हम लोगों के ग्रुप में खुलकर संविधान संशोधन की मांग उठाई। मैं मानता हूं कि संविधान संशोधन की बात उठाने वाले हम लोग अकेले थे और उसके कारण नरेंद्र मोदी सरकार को नुकसान उठाना पड़ा क्योंकि नेहरू परिवार ने हमारी मांग का विरोध करने के साथ-साथ उसका दुरुपयोग किया और उसका अर्थ बदल दिया। स्पष्ट है कि वर्तमान में मोदी सरकार के कमजोर होने का कारण हम लोग हैं और हम लोग इस गलती को स्वीकार करते हैं लेकिन हम अपनी मांग पर आज भी डटे हुए हैं। हम भविष्य में और अधिक तेज गति से इस बात की मांग उठाते रहेंगे कि भारत का संविधान राजनेताओं की गुलामी से मुक्त होना चाहिए। उसके लिए कोई एक अलग ग्रुप होना चाहिए ताकि राजनेता ही मनमाने संशोधन न कर सके। मैं आप सबसे यह निवेदन करता हूं कि आप धीरे-धीरे हमारी मांग का समर्थन करें जिससे अगले चुनाव में हम और अधिक तेज गति से अपनी बात समाज के बीच उठा सकें।

14. वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व ही एकमात्र मार्ग:

हिंदुत्व पूरी तरह वर्ण व्यवस्था को मानता है। वर्ण व्यवस्था का मतलब यह है कि शक्ति की तुलना में विचारों का महत्व अधिक है। क्षत्रिय को हमेशा ब्राह्मण की सलाह पर ध्यान देना चाहिए। दुर्भाग्य से हम वर्तमान मुसलमानों की नकल करते हुए बुद्धि की जगह पर डंडे को अधिक महत्वपूर्ण मानने लगे हैं। वर्तमान चुनाव में भी हम लोगों ने उग्र हिंदुत्व के नेतृत्व को स्वीकार कर लिया जो उचित नहीं था। शराफत और हिंदुत्व के बीच यदि तुलना की जाएगी तो शराफत का महत्व अधिक होगा। उग्र हिंदुत्व शराफत को महत्व नहीं देता, संगठन को महत्व देता है वैचारिक हिंदुत्व शराफत को महत्व देता है, संगठन को नहीं। इसलिए अब हमें नए सिरे से वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व के नेतृत्व में भविष्य की राजनीति को बढ़ाना चाहिए। यदि मुसलमान इस नीति को नहीं मानता है तो पूरा देश मुसलमानों के खिलाफ खड़ा हो सकता है लेकिन यदि हिंदू उग्र

हिंदुत्व के साथ आगे बढ़ा तो सभी मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, हिंदुत्व के खिलाफ खड़ा हो सकते हैं जो वास्तव में हिंदुत्व के लिए घातक होगा। मैं फिर से यह निवेदन करता हूं कि हम उग्र हिंदुत्व का मार्ग छोड़कर वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व के पक्ष में आगे बढ़ें। नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत लगातार ठीक दिशा में चल रहे थे लेकिन पिछले 6 महीना से उन लोगों ने सावरकरवादियों के नेतृत्व को स्वीकार कर लिया, जो भूल हुई है। मेरा यह मत है कि हमें वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व के नेतृत्व में दुनिया का मार्गदर्शन करना चाहिए। हिंदुत्व क्या है इस यह गांधी ही परिभाषित कर सकते हैं, विविधतानंद परिभाषित कर सकते हैं, दयानंद परिभाषित कर सकते हैं सावरकर नहीं नेहरू नहीं राहुल गांधी नहीं जो लोग सावरकर या नेहरू के हिंदुत्व की वकालत करते हैं वे लोग गलत हैं। नरेंद्र मोदी बिल्कुल ठीक दिशा में चल रहे हैं, सावरकरवादियो को अपनी भूल सुधार लेनी चाहिए।

15. सत्ता परिवर्तन तक सीमित व्यवस्था परिवर्तन की कवायद:

आजकल भारत में व्यवस्था परिवर्तन के नाम से अनेक संस्थाएं खुली हुई है लेकिन मैं यह समझता हूं कि उनमें से अधिकांश व्यवस्था परिवर्तन का अर्थ ही नहीं जानती हैं वे व्यवस्था परिवर्तन के नाम पर सत्ता परिवर्तन तक सीमित रह जाते हैं जबकि व्यवस्था परिवर्तन का सिर्फ और सिर्फ एक ही अर्थ होता है कि हमारे देश का संविधान तंत्र की गुलामी से मुक्त होना चाहिए। जब तक संविधान गुलाम है तब तक कोई व्यवस्था परिवर्तन संभव नहीं है क्योंकि व्यवस्था परिवर्तन और संविधान मुक्ति एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। जब तक संविधान संशोधन का अधिकार तंत्र से हटकर लोक द्वारा बनाई गई किसी अन्य व्यवस्था के हाथ में नहीं आता तब तक आप आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक किसी प्रकार का कोई व्यवस्था परिवर्तन नहीं कर सकते क्योंकि जब तक तिजोरी की चाबी तंत्र के पास है, तब तक आपके पास बंद तिजोरी रखने का लाभ क्या है। आप उसका उपयोग तो कर ही नहीं सकते हैं इसलिए हमें वह चाबी प्राप्त करने का प्रयास करना होगा। मैं आपको स्पष्ट कर दूं कि हम लोगों की संस्था का एकमात्र प्रयास यही होगा कि संविधान तंत्र की गुलामी से मुक्त हो। इसके साथ-साथ हम वर्तमान स्थिति पर भी नजर रखेंगे। वर्तमान समय में साम्यवाद इस्लाम और नेहरू परिवार के गठजोड़ के खिलाफ जो भी लड़ाई लड़ेगा हम उसे लड़ाई में सब की मदद करेंगे। हम यह भी चाहेंगे कि धर्म के आधार पर देश की राजनीति न चले अर्थात हिंदू और मुसलमान इसके बीच में बंटवारा ना होकर सांप्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता के बीच विभाजन हो। इसलिए मेरे विचार से नरमपंथी हिंदू पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष माने जाते हैं, हमें धार्मिक कट्टरवाद का साथ नहीं देना चाहिए। मैं आपको स्पष्ट कर दूं कि भविष्य में नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व की दिशा में ही चलेंगे, जो धर्मनिरपेक्षता का

पर्यायवाची है। अब हम कट्टर हिंदुत्व की तरफ नहीं चलेंगे। यह बात तय हो गई है अब राजनीति का नेतृत्व नरम हिंदुत्व के पास रहेगा, कट्टर हिंदुत्व के पास नहीं।

ज़ूम कार्यक्रम से

कल रात 8:00 मार्गदर्शक चर्चा कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय संविधान की समीक्षा विषय पर एक विस्तृत चर्चा हुई। चर्चा में 18 लोगों ने भाग लिया, लगभग 17 लोगों ने इस बात से सहमति व्यक्त की कि भारत का संविधान हमारे देश की प्रमुख समस्याओं की जड़ है। हमारे संविधान में प्रारंभ में ही कुछ गलतियां हुई संविधान संशोधन का अंतिम अधिकार राजनेताओं को नहीं देना चाहिए था। बल्कि उसके लिए अलग से एक संविधान सभा बननी थी लेकिन हमारे नेताओं ने बुरी नीयत से वह अधिकार भी अपने पास रख लिया। संविधान लागू हो जाने के बाद हमारे नेताओं ने संविधान में मनमाने संशोधन किये और इतने संशोधन कर दिए कि यह संविधान कूड़ा कचरा बन गया। आज हमारा संविधान हमारी सबसे बड़ी समस्या बनी हुई है। इस संविधान के स्वरूप में अब बदलाव होना चाहिए। अन्य संशोधन भले ही देर से हों लेकिन एक संशोधन तो तत्काल होना चाहिए कि अब संसद भविष्य में संविधान में मनमाना संशोधन न कर सके और उसके लिए एक अलग से संविधान सभा बने। वह संविधान सभा जनता के द्वारा निर्वाचित हो। उसमें तंत्र का कोई हस्तक्षेप ना हो। संविधान संशोधन के मामले में सब लोगों ने खुलकर के अपनी बात रखी हमारे एक कम्युनिस्ट साथी ने जरूर संविधान संशोधन का पूरा विरोध किया लेकिन उनको किसी और का कोई समर्थन नहीं मिला। इस तरह कल यह चर्चा डेढ़ घंटे तक चलती रही। इस विषय पर हम लोग आगे भी चर्चा करते रहेंगे।

16. लोक नियंत्रित तंत्र के अग्रदूत 'बजरंग मुनि' :

(प्रेस नोट) कल 25 जून को छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले में आपातकाल की यादगार के रूप में एक सभा आयोजित की गई। उक्त सभा में बजरंग मुनि जी को स्वतंत्रता संघर्ष सेनानी के रूप में सम्मानित किया गया। बलरामपुर जिले से बजरंग मुनि एकमात्र ऐसे व्यक्ति रहे हैं जो उस आपातकाल में 18 महीने तक अंबिकापुर तथा रायपुर जेल में बंद रहे। बजरंग मुनि जी ने अपने अनुभव सुनाते हुए बताया कि 14 वर्ष की उम्र में ही यह महसूस कर लिया गया था कि साम्यवाद दुनिया की सबसे अधिक खतरनाक विचारधारा है और इस्लाम सबसे अधिक खतरनाक संगठन। नेहरू परिवार वोटो की लालच में इन दोनों को प्रोत्साहित कर रहा है। इसलिए वर्तमान भारत की सबसे बड़ी समस्या है साम्यवाद, संगठित इस्लाम और नेहरू परिवार का गठजोड़। उस समय से ही उन्होंने अपने जीवन में इस गठजोड़ का विरोध करना शुरू किया और इस विरोध के कारण उन्हें

18 महीने तक आपातकाल में जेल में भी बंद करके रखा गया। इस पहले आपातकाल के बाद भी नेहरू परिवार का आक्रोश कम नहीं हुआ। नेहरू परिवार ने 1996 में रामानुजगंज शहर पर फिर से एक नया आपातकाल घोषित किया। शहर को चारों तरफ से पुलिस बुलाकर घेर लिया गया, बजरंग मुनि जी को नक्सलवादी घोषित कर दिया गया। शहर के कई लोगों को जेल में बंद कर दिया गया, मुनि जी के आश्रम को भी बर्बाद कर दिया गया और 30 मार्च 1996 को मुनि जी को गोली मारने की भी योजना बन गई। जिसमें मुनि जी गांधीवादियों की मदद से बच गए। यह दूसरा आपातकाल भी मुनि जी ने झेला है। आज भी बजरंग मुनि जी 85 वर्ष की उम्र में भी, इस बात के लिए लगातार प्रयत्नशील हैं की साम्यवाद, इस्लामी संगठनवाद और नेहरू परिवार के गठजोड़ को हर हालत में समाप्त करना चाहिए, तभी भारत में लोकतंत्र बचेगा। मुनि जी ने अपने भाषण में यह बात भी बताई कि भारत में आज भी राजनीतिक दलों में किसी प्रकार का लोकतंत्र नहीं है, यह एक बहुत बड़ा खतरा है। हमें वर्तमान संविधान की बुराइयों को किनारे करके भारत में अनवरत लोकतंत्र की गारंटी देनी चाहिए। मुनि जी ने बताया कि मैं इस दिशा में निरंतर सक्रिय हूँ। बलरामपुर क्षेत्र के लोगों ने इस आयोजन में बजरंग मुनि जी को सम्मानित किया।

ज्ञानेंद्र आर्य

राजनीति के 10 नाटक

वैसे तो सारी दुनिया ठीक दिशा में नहीं चल रही है लेकिन हम यदि भारत का आकलन करें तो भारत भी ठीक दिशा में नहीं जा रहा है। भौतिक उन्नति तो बहुत तेजी से हो रही है लेकिन नैतिक पतन भी उतनी ही तेजी से हो रहा है, कुल मिलाकर हम नीचे जा रहे हैं। हम लोगों ने इस विषय पर बहुत गहराई से चिंतन किया। धर्म, राज्य, अर्थव्यवस्था तथा अन्य अनेक मुद्दों पर बहुत बार सोचा। अन्त में मैनें निष्कर्ष निकला कि गिरावट तो सब जगह आई है लेकिन इस गिरावट का सबसे बड़ा आधार वर्तमान में प्रदूषित राजनीति है। राजनीति ने ही सभी सामाजिक, आर्थिक, धर्म व्यवस्था को क्षति पहुंचाई है। राजनीतिज्ञों का जितना अधिक नैतिक पतन हुआ है, उसका समाज पर उतना ही सीधा और व्यापक दुष्प्रभाव पड़ा है। जिस राजनीति को पुराने जमाने में एक अनिवार्य बुराई बताया गया था, वह अब अनिवार्य आवश्यकता बन गई है, बुराई नहीं। वर्तमान राजनीति का समाज के घर-घर में इतना अधिक प्रवेश हो गया है कि भारत राजनीतिक निरपेक्ष रहा ही नहीं। हर घर में राजनीति घुस गई है। नासमझ लोग धर्मनिरपेक्षता की बात करते हैं, कभी राजनीतिक निरपेक्षता की बात नहीं करते क्योंकि वे स्वयं भी राजनीति के दलदल में गहराई तक डूबे हुए हैं। वे स्वयं तो राजनीति का मजा ले रहे हैं और इसलिए वे धर्म, अर्थ, व्यवस्था और पता नहीं क्या-क्या चिंता करते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि सारी समस्याओं की जड़ राजनीति में छिपी हुई है। हम

लोगों ने इस बात पर भी गंभीरता से विचार किया कि राजनीति का इतना अधिक प्रसार प्रचार क्यों हुआ तो हम लोगों ने पाया कि राजनीति 10 प्रकार के नाटक करती है और उन नाटकों का प्रभाव समाज पर पड़ता है। उन 10 नाटकों में से हम प्रतिदिन एक विषय पर चर्चा करेंगे और हम इस बात का अध्ययन करेंगे कि हम राजनीतिक निरपेक्ष बनने के लिए क्या कर सकते हैं।

1. हम भारतीय राजनीति में होने वाले नाटकों पर चर्चा कर रहे हैं। हमारे देश के कई आर्थिक विशेषज्ञों ने भी यह बात लिखी कि डॉलर की तुलना में रुपया लगातार नीचे गिर रहा है, जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए घातक है। देश के राजनेता तो स्वतंत्रता के बाद लगातार यह बात कहते ही रहे हैं, मेरे एक मित्र ने भी आज यह बात लिखी कि डॉलर रू.84 के आसपास आ गया है और नरेंद्र मोदी इस विषय में चिंतित नहीं है। मैंने भी इस विषय पर खूब सोचा। मैं जानता हूं कि 1965 में डॉलर रू.4.76 पैसे के बराबर था। उसके बाद सन 2004 में डॉलर रू.45.32 पैसे के बराबर था। 2014 में जब मनमोहन सिंह की सरकार थी तो डॉलर बढ़कर रू.62.33 पैसा हो गया था। इसका मतलब यह हुआ कि 10 साल के कांग्रेसी शासन में डॉलर में 38ः की वृद्धि हुई थी 14 से 24 तक डॉलर रू.62 से बढ़कर रू.84 हो गया है, इसका मतलब यह है कि डॉलर में 35ः की वृद्धि हुई है। मैं आज तक नहीं समझ सका कि यह डॉलर में वृद्धि का हल्ला झूठ है या सच्चा क्योंकि मेरा यह मानना रहा है कि सन 47 से आज तक, रुपया धीरे-धीरे मजबूत हुआ है। डॉलर की तुलना में कमजोर नहीं हुआ है क्योंकि रुपए का मूल्यह्रास, इसका कोई आकलन नहीं कर सकता। सन 47 में 1रू. में जितने शक्कर आती थी या जितना गेहूं आता था आज भी रू.1 में आपको उससे अधिक ही मिल सकता है कम नहीं। स्वतंत्रता के बाद मुद्रास्फीति अब तक 200 गुनी बढ़ चुकी है इसका मतलब यह हुआ कि डॉलर को रू.200 होना चाहिए था लेकिन क्योंकि कुछ अमेरिका में भी मुद्रा स्थिति है इसलिए डॉलर 200 का न होकर के रू.84 के बराबर है और अगर अमेरिका की मुद्रा स्फीति से घटकर देखें तो डॉलर के बदले में रुपया रू.100 होना चाहिए था जो अभी रू.84 है इसका सीधा अर्थ यह है की स्वतंत्रता के बाद रुपया मजबूत हुआ है और कांग्रेस शासन की तुलना में नरेंद्र मोदी के शासन में भी रुपया मजबूत हुआ है कमजोर नहीं। मैं चाहता हूं इस विषय पर हम लोग गंभीरता से विचार करें कि डॉलर के बदले रुपया कमजोर हो रहा है यह झूठी बात देश में लगातार फैलाई जा रही है। मैं बचपन से यह बात सुनते आ रहा हूं आज भी सुन रहा हूं जबकि यह राजनीतिक झूठ है।

2. दुनिया के राजनेताओं की तरह ही भारत के राजनेता भी 10 प्रकार के नाटक करते हैं। वह हमेशा इस बात का प्रयत्न करते हैं कि समाज को किसी भी परिस्थिति में एकजुट नहीं होने देना

चाहिए। समाज को हमेशा वर्गों में बांटकर उनके बीच आपसी टकराव पैदा करना चाहिए और राज्य उसमें पंच की भूमिका में रहे, तभी वह राज्य अच्छा शासन कर सकता है। इसके लिए राज्य हमेशा यह प्रयत्न करता है कि धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्रीयता, युवा-वृद्ध, महिला-पुरुष, गरीब-अमीर, किसान-मजदूर इस प्रकार के वर्ग बनाकर उनके बीच हमेशा टकराव बढ़ाते रहना चाहिए। स्वतंत्रता के बाद लगातार सभी राजनेता इस प्रकार के टकराव को बढ़ाते रहे। आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ जब कोई भी राजनीतिक दल इन आधारों में से किन्हीं आधारों का प्रयोग ना करें। इसका मतलब यह हुआ कि सभी राजनीतिक दल आठो आधारों पर वर्ग-विद्वेष बढ़ाते रहते हैं और खुद किसी एक पक्ष में अल्पकाल के लिए खड़े हो जाते हैं, कुछ वर्षों के बाद उनका पक्ष बदल जाता है। इस तरह समाज में यह राजनेता कभी भी एकजुटता नहीं होने देते। यह इन राजनेताओं के नाटकों का पहला भाग है। आप प्रत्यक्ष देख सकते हैं किन आठों आधारों पर समाज में वर्ग विद्वेष बढ़ाने में सभी पार्टियों के राजनेता लगातार सक्रिय हैं।

3. भारत का हर राजनेता यह लगातार कोशिश करता है, कि समाज में वैचारिक बहस आगे ना बढ़े, भावनात्मक मुद्दों पर चर्चा होती रहे क्योंकि वैचारिक चर्चा करना उनकी क्षमता भी नहीं है और दोनों के लिए हानिकारक भी है। यदि तर्कसंगत चर्चाएं होगी तो लोग आसानी से ठगे नहीं जाएंगे, इसलिए हमेशा यह प्रयत्न होता है कि भावनात्मक विषयों पर चर्चा होती रहे। जब भी कभी अपराधों में पुलिस की भूमिका की चर्चा होगी तो अपराधियों पर चर्चा न होकर पुलिस पर चर्चा अधिक होगी, पुलिस की आलोचना ज्यादा होगी। जब भी कभी अपराधों पर चर्चा होगी तब नेता उस चर्चा को घुमाफिरा कर महंगाई, गरीबी, शिक्षा ,स्वास्थ्य इस दिशा में ले जाएंगे। जब भी कभी समाज में अव्यवस्था पर चर्चा होगी, नेता लोग धर्म जाति पर उस चर्चा को मोड देंगे। यहां तक कि भारत में यह कल्पना कि गई थी की संसद वैचारिक चर्चाओं का केंद्र होगी, संसद में विचार मंथन होगा और स्वतंत्र विचार मंथन के माध्यम से निष्कर्ष निकाले जाएंगे लेकिन आज संसद को मछली बाजार कह सकते हैं, एक अखाड़ा कह सकते हैं, जहां दंगल होता है। संसद देश के आम नागरिकों को गुमराह करने का एक केंद्र बन गया है। जब संसद में ही विचार मंथन नहीं होगा तो और कहां होगा। धर्म स्थान में तो विचार मंथन बंद ही हो गया है, इसलिए हम यह देख रहे हैं कि भारत का हर राजनेता चिंतन से भागता है, मंथन से भागता है, निष्कर्ष नहीं निकलता। हमेशा भावनात्मक मुद्दों को आगे रख करके चुनाव जीतना चाहता है। अब समय आ गया है कि हम राजनीति के ऐसे दुर्गुणों से समाज को जागृत करें।

4. मैंने लिखा है राज्य हमेशा सामाजिक एकता से डरता है। वह निरंतर प्रयास करता है कि समाज कभी एकजुट ना हो। समाज शब्द समाज में बहुत प्रतिष्ठित है इसलिए राज्य हमेशा कोशिश करता है कि समाज शब्द की प्रतिष्ठा गिरे सामाजिक एकता भी छिन्न-भिन्न होती रहे। इसके लिए राज्य समाज को जाति, धर्म, भाषा, महिला-पुरुष, गरीब-अमीर में तो बांटता ही है दूसरी ओर राज्य हमेशा यह प्रयत्न करता है कि आम लोगों में समाज शब्द की तुलना में धर्म या राष्ट्र दोनों का स्थान ऊंचा रहे। मैंने कई शिक्षण संस्थानों में यह प्रश्न किया कि समाज बड़ा है कि राष्ट्र अधिकांश लोगों ने उत्तर दिया 'राष्ट्र'। जब भी मैं मुसलमान से पूछा कि समाज बड़ा है कि धर्म तो मुसलमान ने उत्तर दिया धर्म। किसी ने यह उत्तर नहीं दिया कि समाज सबसे ऊपर है क्योंकि आम नागरिकों में यह जहर डाल दिया गया है कि धर्म या राष्ट्र समाज से ऊपर होता है। जबकि सच्चाई यह है कि समाज शब्द की ना कोई भौगोलिक सीमा होती है ना मानवीय संख्या होती है, समाज दुनिया के 750 करोड़ व्यक्तियों को मिलकर बनता है और सभी देश समाज के अंग होते हैं। राष्ट्र समाज के टुकड़े होते हैं, प्रकार नहीं। इसलिए मेरा यह निवेदन है कि समाज से ऊपर धर्म या राष्ट्र को मानना पूरी तरह घातक है। हमें राज्य की चालबाजियों से बचना चाहिए। हर राजनेता हमेशा यही बोलता है कि राष्ट्र समाज से ऊपर है, हर धर्म गुरु बोलता है कि धर्म समाज से ऊपर है, जबकि मैं कहता हूं कि समाज, धर्म और राष्ट्र से ऊपर है। राष्ट्र समाज के सुरक्षा की गारंटी देता है और धर्म समाज का मार्गदर्शन करता है, दोनों मिलकर समाज के सहायक हैं समाज के मालिक नहीं।

5. भारत की राजनीति 10 प्रकार के नाटकों के सहारे ही स्वयं को मजबूत करती है और देश का हर राजनेता चाहे वह गांव का पंच हो या देश का सांसद हो इन नाटकों में शामिल रहता है। आज हम नाटक के पांचवें दृश्य पर चर्चा कर रहे हैं। इस दृश्य में देश का हर नेता अपने को सक्षम और योग्य घोषित करके, आम लोगों को अक्षम अयोग्य अनपढ़ मानता है, साथ में पूरे समाज को वह बैकवर्ड मानता है और अपने को फॉरवर्ड कहता है। इस तरह हर राजनेता दिन-रात हम लोगों का मनोबल तोड़ता रहता है और अपना मनोबल बढ़ाता रहता है। दुनिया जानती है कि हम लोग उसको नियुक्त करते हैं और वह हमारा मैनेजर होता है लेकिन फिर भी वह दिन-रात नाटक कर करके अपने को मालिक बना लेता है, हम लोगों के अंदर हीनभाव भर देता है। हम यह समझने लगते हैं कि वास्तव में हम कुछ नहीं जानते हैं और नेता सब कुछ जानता है। हमें राजनेताओं के इस प्रकार के नाटकों से बचना होगा, हम नियुक्त नहीं है, हम नियोक्ता हैं। हम उन्हें नियुक्त करते हैं, हम उनका वेतन देते हैं, हम उन्हें सुविधा देते हैं और वह नाटक कर करके हमी को बैकवर्ड कहते हैं। अब इस प्रकार के नाटकों से समाज को मुक्त होना चाहिए।

6. आज हम राजनीति के 10 नाटकों में से छठे नाटक पर चर्चा कर रहे हैं। भारत का हर राजनेता हमेशा यह प्रयास करता है कि सामाजिक समस्याओं का प्रशासनिक और आर्थिक समाधान हो। सामाजिक समस्याओं का कभी भी सामाजिक समाधान नहीं खोजा जाता। छुआछूत, पर्दाप्रथा, दहेजप्रथा या परिवारों में टूटन यह सब सामाजिक समस्याएं हैं, इनका प्रशासनिक समाधान हो ही नहीं सकता। दुर्भाग्य है कि भारत का हर राजनेता, जुआ-शराब, दहेज आदि को रोकने के लिए तो प्रशासनिक उपाय करता है लेकिन नक्सलवाद, आतंकवाद, सुरक्षा इस प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए वह सामाजिक और आर्थिक समाधान सोचता है। जबकि सामाजिक समस्याओं का सामाजिक आर्थिक समस्याओं का आर्थिक प्रशासनिक समस्याओं का प्रशासनिक समाधान होना चाहिए। जेल को एक सुधार ग्रह के रूप में बनाया जा रहा है, जबकि जुआ के लिए जेल में बंद किया जा रहा है। आज हमारे छत्तीसगढ़ के पुलिस वाले नक्सलवाद के प्रति उतना सक्रिय नहीं है। मिलावट रोकना उनकी प्राथमिकता में नहीं है, उनकी प्राथमिकता में है सट्टा रोकना, उनकी प्राथमिकता में है, वेश्यावृत्ति रोकना, बलात्कार चाहे रुके या ना रुके लेकिन वेश्यावृत्ति जरूर रोकेंगे। डकैती रुके या ना रुके लेकिन किसी को भूखा कभी नहीं करने देंगे। हाथी अगर किसी को कुचल दे तो उसे नाम मात्र का मुआवजा मिलेगा लेकिन यदि किसी नाव एक्सीडेंट में कोई मर जाए तो उसे 10 लाख भी मिल सकता है और यदि कोई किसान आंदोलन करते हुए मारा जाय तो उसे 50 लाख भी दिया जा सकता है। राजनीति का यह नाटक समाज को गुलाम बनाने का एक माध्यम है इस संबंध में समाज को जागरूक रहना चाहिए। यह नाटकबाज नेता हमेशा हमें गुलाम बनाकर रखना चाहते हैं और गुलाम बनाने का नेताओं का सबसे अच्छा हथियार है 10 प्रकार के नाटक।

7. आज हम राजनीति के सातवें प्रकार के नाटक पर चर्चा कर रहे हैं। सच बात यह है कि देश का कोई भी राजनीतिक दल किसी भी स्थिति में किसी भी समस्या का समाधान नहीं करना चाहता। वह नई समस्याएं पैदा करता है और उन समस्याओं का इस तरह का समाधान खोजता है, जिससे एक नई समस्या पैदा हो और वह उस नई समस्या का फिर से ऐसा समाधान करें, जिससे कोई और समस्या पैदा हो क्योंकि यदि नई समस्याएं पैदा नहीं होगी तो समाज की राजनेताओं पर निर्भरता समाप्त हो जायेगा। यही कारण है कि राजनेता हमेशा आम जनता को सरकार का मुखापेक्षी बनाकर रखना चाहता है अर्थात आम लोग हमेशा सरकार पर निर्भर रहे कभी वह अपने को आत्मनिर्भर समझने की गलती ना करें। यदि लोग अपने को आत्मनिर्भर मानने लगेंगे तो सरकार की भूमिका ही समाप्त हो जाएगी। इसलिए सभी सरकारें हमेशा समस्याओं का इस तरह समाधान करती हैं, जिससे कोई एक नई समस्या पैदा हो। वर्तमान में महिला और पुरुष के नाम से एक समस्या

पैदा की जा रही है, अगले 10-20 वर्षों में पुरुष जब एकजुट हो जाएंगे और एकजुट होकर महिलाओं के खिलाफ आवाज उठाएंगे, तब यह राजनेता पुरुषों के पक्ष में खड़े हो जाएंगे। इसी तरह हर मामले में राजनेताओं का समस्या को पैदा करना और उनके समाधान का नाटक करना, यह क्रम चलता रहता है। महंगाई, गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा यह कोई प्रमुख समस्या नहीं है लेकिन राजनेता हमेशा समाधान कर रहा है। वह गरीबों पर कई प्रकार के टैक्स लगाकर, उन्हें मुफ्त राशन, मुक्त चिकित्सा देने का नाटक करता रहता है। कभी वह गरीबों की क्रय शक्ति को नहीं बढ़ने देता। आप एक भी राजनेता ऐसा नहीं पाएंगे जो वास्तविक समस्याओं को समझें और उनका वास्तविक समाधान करें।

8. आज हम राजनीति के आठवें नाटक पर चर्चा कर रहे हैं। दुनिया के सभी राजनेता हमेशा स्वयं को बिल्लियों के बीच बंदर की भूमिका में रखना चाहते हैं। बिल्लियों के बीच बंदर की तीन प्रकार की भूमिकाएं हुआ करती हैं। पहली बिल्लियों की रोटी कभी बराबर ना हो, इसका अर्थ यह हुआ कि यदि समस्या सुलझ गई तो बंदर की जरूरत ही खत्म हो जाएगी, इसलिए समस्या को कभी भी सुलझाने नहीं देना है, इसलिए बंदर हमेशा प्रयत्न करता है की रोटियां कभी बराबर ना हो। दूसरी बात यह है कि बंदर हमेशा बिल्लियों के बीच यह विश्वास कराता रहता है कि हम रोटियां बराबर कर रहे हैं यदि बिल्लियों को ऐसा लगा कि बंदर रोटी को बराबर नहीं कर रहा है तो बंदर पर से विश्वास खत्म हो जाएगा इसलिए बंदर हमेशा बराबर करने में सक्रिय रहता है और इस बराबर के आधार पर ही बंदर बड़ी रोटी वाली बिल्ली की रोटी में से काट-काट कर टुकड़े खाता रहता है तीसरी बात यह है की बंदर हमेशा प्रयत्न करता है की छोटी रोटी वाली बिल्ली के मन में असंतोष की ज्वाला जलती रहे। यदि छोटी रोटी वाली बिल्ली को संतुष्टि मिल गयी कि मेरे भाग्य में यही लिखा था तो बंदर भूख से मर जाएगा इसलिए बंदर हमेशा यह प्रचार करता रहता है कि तेरे घर के बगल में एक जो बहुत बड़ी आलीशान बिल्डिंग बनी हुई है वह तेरे घर में सूर्य की रोशनी आने से रोक रही है वह हवा नहीं आने दे रही है अगर उस भवन को गिरा दिया जाए तो तेरे घर में रोशनी और हवा आने लग जाएगी इस प्रकार भारत का हर राजनेता तीनों दिशाओं में लगातार सक्रिय रहता है। 75 वर्षों से गरीबी, आर्थिक असमानता, श्रम शोषण, महंगाई, बेरोजगारी जैसी समस्याओं को दूर करने का नाटक भी किया जा रहा है और दूर किया भी नहीं जा रहा है और गरीबों के मन में असंतोष की ज्वाला भी जलाकर रखी जा रही है। इस प्रयत्न में वैसे तो सभी राजनीतिक दल समान रूप से सक्रिय है लेकिन साम्यवादियों की भूमिका सबसे अधिक रहती है। साम्यवादी तो हमेशा तीनों दिशाओं में दिन-रात पागलों सरीखे प्रचार करते रहते हैं क्योंकि साम्यवाद हमेशा अपने को बिल्लियों के बीच बंदर की भूमिका में स्थापित करता है।

9. आज हम राजनीति के 10 नाटकों में से नवें नाटक पर चर्चा कर रहे हैं। भारत की राजनीति हमेशा इस बात में सक्रिय रहती है कि देश में लोकतांत्रिक तरीके से असमानता बढ़ती रहे क्योंकि यदि असमानता कम हो जाएगी तो लोग आत्मनिर्भर होने लगेंगे। इस स्थिति में राज्य पर निर्भरता लोगों की कम हो जाएगी इससे उनकी राजनीतिक दुकानदारी पर दुष्प्रभाव पड़ेगा। यह कार्य सबसे पहले पंडित नेहरू ने शुरू किया और उन्होंने अंग्रेजों की नकल करते हुए आर्थिक असमानता को बढ़ाने की नीतियां बनाई। आज भी देश की सभी सरकारें नेहरू परिवार की नीतियों का अक्षरशः पालन कर रही हैं। आर्थिक असमानता को लोकतांत्रिक तरीके से बढ़ाने के लिए सरकार दो प्रकार के उपाय करती है। पहले जो वस्तु गरीब लोग ज्यादा उपयोग करें, उन वस्तुओं पर अप्रत्यक्ष कर लगाकर उन्हें प्रत्यक्ष सुविधा दी जाए, दूसरी ओर जिन वस्तुओं का अमीर लोग ज्यादा और गरीब कम उपयोग करते हैं, उन वस्तुओं पर प्रत्यक्ष कर लगाकर अप्रत्यक्ष सब्सिडी दी जाए। दुनिया जानती है कि भारत का हर गरीब, अनाज, कपड़ा, दवा इन सब का बहुत अधिक उपयोग करता है, कृत्रिम उर्जा आवागमन यात्रा का कम। भारत की सरकार गेहूं, चावल, दवा, कपड़ा, कृषि उत्पादन, वन उत्पादन सब पर भारी अप्रत्यक्ष टैक्स लगाकर, उन्हें सस्ता चावल, सस्ती शिक्षा, सस्ता इलाज इस प्रकार देकर नाटक करती रहती है। दूसरी ओर अमीर लोग डीजल, पेट्रोल, बिजली, केरोसिन, गैस, कोयला, आवागमन इन सब का बहुत अधिक उपयोग करते हैं, गरीब लोग इनका नाम मात्र उपयोग करते हैं, इन सब के मूल्य घटाकर रखे जाते हैं, इन सब में सब्सिडी दी जाती है। स्पष्ट है कि आर्थिक असमानता बढ़ाने का यही लोकतांत्रिक तरीका होता है। आप देखेंगे कि यदि कृषि उत्पादन पर कोई टैक्स लग जाए तो कोई हो हल्ला नहीं होगा लेकिन यदि रसोई गैस का दाम बढ़ जाए, सब लोग आसमान सिर पर उठा लेते हैं। यह आश्चर्यजनक है कि भारत में साइकिल पर भारी टैक्स लगता है और रसोई गैस को भारी सुविधा मिलती है। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि आर्थिक असमानता बढ़ाने के लिए लोकतांत्रिक तरीके से की गई कोशिशें का पर्दाफाश होना चाहिए।

10. आज हम राजनीति के 10 नाटकों में से अंतिम नाटक पर चर्चा कर रहे हैं। भारत का हर नेता इस बात को जानता है कि समस्याएं पांच प्रकार की होती हैं १.वास्तविक २.कृत्रिम ३.प्रातिक ४.भूमंडलीय और ५.अस्तित्वहीन। यह पांचो प्रकार की समस्याएं पूरे भारत में व्याप्त है, वास्तविक समस्याओं में चोरी, डकैती, लूट, मिलावट, बलात्कार, जालसाजी, धोखाधड़ी, लड़ाई-झगड़ा, मारपीट इस प्रकार की समस्याएं आती हैं जो आपराधिक होती हैं। कृत्रिम समस्याओं में भ्रष्टाचार, नैतिक पतन, आर्थिक असमानता, श्रम शोषण, जातीय टकराव, सांप्रदायिकता जैसी अनेक समस्याएं शामिल होती हैं। प्राकृतिक समस्याओं में कोरोना, बाढ़, भूकंप, बीमारियां यह सब

समस्याएं आती हैं। भूमंडलीय समस्याओं में विश्व युद्ध, विश्व स्तरीय बीमारियां, जैसी अनेक समस्याएं शामिल हैं। असत्य या अस्तित्वहीन इन समस्याओं में महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, दहेज, भूख, दहेज, महिला उत्पीड़न, बाल श्रम सरीखी अनेक समस्याएं शामिल हैं। भारत का हर राजनेता समाज में भ्रम फैलाने के उद्देश्य से इस प्रकार का नाटक करता है कि वह असत्य समस्याओं का पहले समाधान करना चाहता है। जबकि सच बात यह है कि वास्तविक समस्याओं का अर्थात अपराध नियंत्रण को सर्वाेच्च प्राथमिकता देनी चाहिए थी। भारत का हर राजनेता गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी और पता नहीं ऐसी अनेक समस्याओं का समाधान करता रहता है जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं है। सब कुछ हो जाने के बाद जूठन के रूप में चोरी-डकैती, बलात्कार, मिलावट, हिंसा इस प्रकार के अपराधों पर वह ध्यान देता है। जिन समस्याओं को सर्वाेच्च प्राथमिकता में रखना चाहिए था, उन समस्याओं को सबसे अंत में रखा जाता है। हमारे देश का कुल बजट एक प्रतिशत पुलिस और न्यायालय पर खर्च होता है, बाकी सारा बजट फालतू-फालतू कार्यों में खर्च कर दिया जाता है। हमारे न्यायालय भी जितना भूख, दहेज, महिला उत्पीड़न, यौन शोषण और पता नहीं किन-किन मामलो पर ध्यान देते हैं, जबकि आपराधिक मामलों पर न्यायपालिका सबसे कम ध्यान देती है।

जीवन पथ

गतांक से आगे...

देखो बेटा, तुम यहाँ पर समाज की समस्याओं के निराकरण की विधियों का अन्वेषण कर रहे हो। धैर्य से कार्य लो और विचार करो! यह मत समझो कि विवेक का कहना अन्तिम है। किसी सामाजिक कार्य में व्यक्ति की राय अन्तिम नहीं होती है बल्कि उस विषय में समाज की सहमति सर्वोपरि होती है। समाज में विधि का अन्वेषण और स्थापना इसी प्रकार होनी चाहिए। .....तुम इस विषय को इस दृष्टिकोण से न देखो कि कोई सार्वभौमिक विचार, समाज व्यवस्था के रूप में किस प्रकार स्थापित होगा बल्कि इस दृष्टिकोण से देखो कि उसकी पुनर्स्थापना करने के कारण क्यों बने हैं?क्या समाज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य को देखते हुए तुम समाज को समाज कह सकते हो? इस बारे में तर्क कहाँ से ढूढोगे! यथार्थ में व्यक्ति की स्वतन्त्रता का अर्थ, स्वार्थ, जाति, सम्प्रदाय, उम्र, लिंग, क्षेत्र, वर्ग, अर्थ, और अवसर जैसे हीन कारणों में निहित है। तुम विमर्श की गरिमा नहीं समझ पा रहे हो, तुम्हारी मानसिकता वाद के दोष से स्वतन्त्र नहीं है और तुम समाज के अस्तित्व का तात्विक दर्शन करना चाहते हो कि यह व्यवस्था समाज में कैसे स्थापित होगी?एक बार स्वतन्त्र व्यक्ति तो बनो पुत्र, मन को अवसरवाद की गुलामी से स्वतन्त्र करो! तब देखना मानवता कैसे प्रफुल्लित

होती है। .....इतना कहकर प्रोफेसर चुप होते हैं तो कुछ क्षण के लिए कक्ष में खामोशी छा जाती है। जिसे तोडते हुए वह छात्र पुनः कहता है- क्षमा कीजिए सर! मैं अपने भटकाव को समझ न सका था। क्या मैं विवेक से अपने दूसरे संशय पर प्रश्न कर सकता हूँ?

हाँ! क्यो नहीं! .....प्रोफेसर उसे सहज स्वीकृति देते हैं।

विवेक! तुमने कुछ समय पहले 'वाद' शब्द पर धारा के विपरीत टिप्पणी की थी। क्या तुम खुद को गांधीवादी कहलाने से इंकार कर सकोगे?

इस प्रश्न के परिप्रेक्ष्य में, मैं यह बात स्पष्ट रूप से कहना चाहुँगा कि मैं गांधी के विचार और कृत्यों को स्वीकार करने वाला उनकी वैचारिक पाठशाला का निःसंकोच छात्र हूँ। लेकिन मैं न तो गांधीवादी हूँ और न दुनिया के किसी अन्य वाद का अनुसरण करता हूँ। वस्तुतः मैं स्वयं को किसी वाद की परिधि में नहीं बांधता। मैं वस्तुस्थिति के कर्तृत्व से शिक्षा पाता हूँ लेकिन चिन्तन के समय मेरी मानसिकता बिल्कुल स्वतन्त्र रहे, वह किसी वाद में न बंधे, इसके लिए मैं स्वयं से प्रतिबद्ध हूँ। यह कैसी रहस्यात्मक टिप्पणी है विवेक! कुछ समझ में नही आयी है! .....इस बार सिमी उससे प्रश्न करती है।

उन महानुभावों के चरित्र का विश्लेषण करो सिमी जिन्होने हमे जीवन निर्वाह के सुगम रास्ते दिखाए हैं और हम उन रास्तों के अन्तिम छोर पर जाकर खडे हो जाते हैं या वापिस लौट आते हैं। वहाँ से आगे जाने की तो हममें हिम्मत नहीं होती है और हम कहनें लगते हैं कि हम अपने आदर्श की बनाई हुई सीमा का उलंघन नहीं कर सकते हैं। अपने किसी आदर्श पुरूष के व्यक्तित्व की यथार्थजन्य विवेचना करना या उससे आगे जाने के प्रयास करने से उस आदर्श की शिक्षाओं का अपमान नहीं होता है बल्कि यह कार्य तो उसकी विरासत को और विस्तृत रूप देने के जैसा है।

और यदि कोई वाद स्वयं में ही पूर्ण हो तो?.....वह पुनः पूछती है।

किसी भी वाद का अनुयाई ऐसा ही मानता है लेकिन ऐसा होता तो संसार में उसे वाद कहा ही नही जाता बल्कि उसे तो प्रकृति कह दिया जाता। धर्म और पन्थ (सम्प्रदायवाद) में यही मूल अन्तर होता है। धर्म, व्यक्ति को किसी 'वाद' में नहीं बांधता है, उसे अपने किसी निश्चित सिद्धान्त का अनुसरण करने के लिए बाध्य नहीं करता है। धर्म, व्यक्ति के आचरण को वस्तुनिष्ठ स्वतन्त्रता प्रदान करता है और पन्थ उसे निजता में समेटता है।